रोक के बावजूद थेलेडोमाइड दवा की बिक्री

नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट का कहना है कि गर्भस्थ शिशुओं में थेलेडोमाइड का प्रभाव उनकी विकासमान रक्त वाहिनियों पर होता है और इसके कारण हज़ारों बच्चे अपंगता के शिकार हुए हैं। थेलेडोमाइड गर्भवती महिलाओं में उल्टी/मितली के उपचार के लिए दी जाती थी। इसे बंद हुए लगभग 50 साल हो गए हैं। मगर 1961 में प्रतिबंध लगने से पहले थेलेडोमाइड की वजह से 10 हज़ार अपंग बच्चे पैदा हो चुके थे। मगर यह दवा एक बार फिर बाज़ार में कुष्ठ व एक प्रकार के कैंसर के उपचार के लिए बिकने आ गई है।

यू.एस. में तो अब कानून यह है कि किसी महिला को यह दवा तभी मिल सकती है जब वह गर्भवती न हो। गर्भ न होने का प्रमाण पत्र देने पर ही डॉक्टर यह दवा देते हैं। मगर कई अन्य देशों में थेलेडोमाइड आज भी खुले आम उपलब्ध है। जैसे एबर्डीन विश्वविद्यालय के नील फर्गेसन ने टीवी पर यह खबर देखी कि अफ्रीकी गर्भवती महिलाएं कुष्ठ के उपचार के लिए थेलेडोमाइड दवा ले रही हैं और बच्चों को जन्म दे रही हैं। इसके बाद फर्गेसन ने इस दवाई पर अध्ययन करने की ठानी।

लेकिन थेलेडोमाइड का अध्ययन करना मुश्किल है। लीवर में इसका विघटन होता है और यह 100 अलग-अलग यौगिकों में टूटती है। इनमें से कोई भी अपंगता का कारण बन सकता है। सामान्यतः थेलेडोमाइड दवा का प्रायोगिक जंतुओं (चूहों) पर असर उनके बच्चों की अपंगता के रूप में नहीं दिखाई दिया। फर्गेसन और सहयोगियों ने थेलेडोमाइड के विघटन से बने पदार्थों को पहचानना और अलग-अलग करना शुरू किया। उन्होंने इनके प्रभाव को मुर्गियों में देखने का प्रयास किया।

उनके शोध से पता चला कि थेलेडोमाइड विघटन का एक उत्पाद नई रक्त वाहिनियों के निर्माण में बाधा पहुंचाता है। स्पष्ट हुआ कि जिन महिलाओं ने गर्भावस्था की प्रारंभिक अवस्था में यह दवाई ली थी, उनमें भ्रूण में नई बनने वाली रक्त वाहिनियों का विकास रुक गया था, जिसके कारण बच्चे अपंग पैदा हुए थे। भ्रूण पर तब ही प्रभाव हुआ था जब उसके हाथ-पैरों का विकास हो रहा था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस अवस्था तक भ्रूण का शेष विकास तो पूर्ण हो चुका था, केवल बाजुओं का विकास बाकी था। ***(स्रोत फीचर्स)***